INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 13 | ISSUE - 3 | APRIL - 2023

मानवता धर्म से पूर्ण संत साहित्य की उपादेयता

डॉ. कविता अरुण सोनवणे
ज्ञानदीप बहुउद्देशीय विद्याप्रसारक मंडल तामसवाडी संचलित,
माध्यमिक विद्यालय सार्वे -बाभळे,त.पारोला,जी.जलगाव.

भारतभूमी को संतों की एक विस्तृत एवं समृद्ध परंपरा प्राप्त हुई है। हमारा सौभाग्य है कि, संतों की पवित्र भूमी पर हमारा जन्म हुआ है। संतों द्वारा लिखित साहित्य अकृत्रिम एवं अनुभूतिजन्य था। उन्होंने स्वयं अपने आचार-विचार की शुद्धता पर बल देते हुए तत्कालीन समय में व्याप्त बाह्यांडबरों एवं विकृतियों का खंडण किया है। आज के नवयुवक एवं कई पाठकों के मन में रह-रहकर यह सवाल उठता है कि, क्या आज के वैश्विकरण, भुमंडलीकरण, बाजारवाद तथा विज्ञान के युग में आध्यात्म, भक्ति एवं तत्त्वज्ञान से भरे संत साहित्य की उपयोगिता भी हैं? क्या इस तत्त्वज्ञान से रोजी रोटी-पेट की समस्या हल हो सकती है? आज के इस स्पर्धात्मक युग में प्रेम, दया और शाती से क्या हासिल होगा? एसे अगनिनत सवालो के समाधान हेतु वर्तमान परिप्रेक्ष में सत साहित्य की उपादेयता को जानना समहाना और समझाना अत्यावश्यक हो जाता है।

संत कबीरदास, तुलसीदास, सूरदास, रैदास, एकनाथ नामदेव ज्ञानेश्वर, तुकाराम, रामदास, गाडगेबाबा, संत सावता माळी, सत मिराबाई, संत जनाबाई, खत गुरुनानक, संत मा. बसवेश्वर आदि सभी भारतीय सत्तों ने एक स्वर में सत्य, अहिंसा, शाती, दया-धर्म, आनंद इन बातो पर जोर दिया है। भले ही उनका मुलत स्वर भक्ति से भरा हो, लेकिन आधुनिक युग में सतो की वाणी ने समस्त मानव जाति को सामाजिक चेतना, कर्मवाद की चेतना, पर्यावरण चेतना, अर्थनीति विषयक ज्ञान तथा मानवताधर्म के प्रति जागरुक किया है।

सतों के विचारों पर विस्तृत रुप से चचर्चा करने से पहले हम सत शब्द की उत्पत्तिपरक अर्थ को जान लें। सत शब्द की उत्पत्ति को लेकर दो तर्क प्रस्तुत किए जाते है। या तो इसे पालि भाषा के उस शांत' शब्द से निकाला हुआ मान सकते है, जिसका अर्थ निवृत्तिमार्गी या विरागी होता है अथवा यह उस सत् शब्द का बहुवचन हो सकता है जिसका अभिप्राय एकमात्र सत्य में विश्वास करने वाला अथवा उसका पूर्णतः अनुभव करलेने वाला व्यक्ति समझा जाता है। परंतु संत' शब्द सत्य का आशय प्रकट करने के अतिरिक्त सद्भाव की भावना का द्योतक है और इस प्रकार संत शब्द अत्यंत व्यापक अभिप्राय का सुचक बन गया है। अर्थात् संत शब्द शांती एवं सद्भाव से संबंधित है। अब हम आज के विज्ञान के युग में संत साहित्य की उपादेयता पर क्रम से चर्चा करेंगे।

सामाजिक एवं धार्मिक चेतना का व्यापक रुप हमें संत साहित्य में मिलता है। संतों ने मानवता से बड़ा किसी धर्म को नहीं माना। संत कबीरदास ने धर्मापासना की उन समस्त कुरितियों का विरोध किया है। उन्होंने धर्म-जाति, कुप्रथा, वर्ण-व्यवस्था आदि का विरोध करते हुए कहा है-

संतन जात न पूछो निरगुनियाँ।
साधन ब्राह्मन साथ छत्तरी, साधे जाती बनियों।
साधन माँ छत्तीस कौम है, टेडी तोर पुछनियी।
साधे नाऊ साधे धोबी, साथ जाति है बारियों।
हिंदू तुक हुई दीन बने है कछु नहीं पहचानियाँ।

यहाँ आदर्श समाज निर्माण के लिए ऊँच-नीच की भावना को मिटाकर समता, बंधुता एवं मानवतावाद के उच्चतम भाव विराजमान करने का प्रयास किया गया है। आगे वे इस संदर्भ में कहते है-

कॉकर पाथर जोरि के, मस्जिद लियो बनाया।
ता चति मुल्ला बाग दे, ज्या बहरा हुआ खुदाय।

आज भी हम देखते है की, आयोध्या में राम मंदिर और बाबरी मस्जिद को लेकर कितने साप्रदायिक एवं सियासी रोटियों भी सेकी जाती है। लेकिन वर्तमान परिस्थिति में हम देखते है कि, आज देश को मंदिर-मस्जिद की जरुरत नहीं अपितु अच्छे सुविधा के अस्पताल, स्कूल, अच्छे कॉलेज और आज के नवयुवकों को उद्योगधंदों को मान्यता देनी जरुरत है। इन स्थितियों संत कबीर का साहित्य प्रासंगिक बन गया है।

पूजा-अर्चना के लिए तो मन की पवित्रता की आवश्यकता है। लेकिन धर्म के नाम पर कई साधु-मूल्ला है जो सामान्य जनता के भाव-भावनाओं से खेलकर समाज को दिशाहीन करते है। ऐसे स्वार्थपूर्ति एवं शोषण करने वाले साधुसन्यासियों पर कटाक्ष साधे हुए मराठी साहित्य के संत तुकाराम कहते है -

ऐसे कैसे झाले भोदू
कर्म करोनी म्हणती साधू
अंगा लावूनियाँ राख
डोळे आकूनी करती पाप
तुका म्हणे सांगू किती जळो तयाची संगती।

कोविड-19 जैसी वैश्विक महामारी के चलते जहाँ सारा विश्व इस महामारी से झूडा रहा है, वहीं एक मात्र सेवा धर्म ही सबसे बड़ा धर्म है, कर्म है। गरीब, दीन, कोरोना से ग्रस्त रोगियों को देख यदि हृदय द्रवित हो और आप मदद के लिए तत्पर हो यहीं बड़ा धर्म है। इस समय संत गाडगेबाबा के विचार प्रासंगिक लगते है। वे कहते है-

'मोती पहने घोडा चढे रण बाँधे तरवार।
गरीब-रोगियों की करद आने याको नाम सरदार।।

संपत्ति का उपयोग सार्थक तभी है, जब हम गरिनो पीडितों एवं रोगियों की वक्त पर मदद करे। आज कोरोना व्हायरस के बढ़ते प्रभाव के कारण देश-विदेश की सारी अर्थव्यवस्था स्तब्ध-सी हो गई है। उस वक्त कई ऐसे उदार लोगो ने लाखो-करोडो का दान कर अपना सेवा-धर्म निभाया और यह सिलसिला अभी भी जारी है। भारत देश ने भी अंतरराष्ट्रीय स्तरपर ऐसे कई देश है उनको आर्थिक मदद एवं मास्क देकर अपना मानवता का सेवा-धर्म निभाया है।

संतों के साहित्य में कर्म को महत्व दिया गया है। अकर्मण्य जीवन गृहस्थी जीवन का हो या संसारी का सच में दोनों ही त्याज्य एवं निदनीय ही है। अधिकतर संतों का जन्म निचले वर्ग में हुआ है, जैसे रैदास-चमार थे, कबीर-जुलाहा, नामदेव-दर्जी, संत सावता माळी थे। लेकिन उन्होंने निम्न कुल के कारण खुद को कम न समझते हुए अपने पारंपारिक व्यवसाय में वे कर्मशील बने रहे। जैसे -

'नामदेव कबीर जुलाहो, मन रैदास तिरै।
दादू बेगि बार-नहि लागे, हरि सौ सबै सरे।।
संत सावता माळी ने ईश्वर को धन्यवाद देते हुए कहा है
भली केली हीन याती, नहि वाढली महती

अर्थात् अच्छा हुआ जो हमारा निम्न योनि में जन्म हुआ, नहीं तो हम भी औरों की तरह अह-दंभ में रह कर निष्क्रिय हो जाते। आज हम देख रहे है की समय बड़े तेजी से बदल रहा है और समय के साथ समस्याएँ भी बदल रही है तथा बढ़ भी रही है। ऐसे समय में हम आत्मनिर्भर होकर तन-मन-धन से छोटा-बडा काम का भेद न करते हुए कर्मवादी बन जायेंगे तो इस कोरोना की महामारी के कारण भारत तथा समुचे विश्व में आयी आर्थिक मंदी से हम जल्द ही उभर सकते है। स्वदेश की ओर चलों और आत्मनिर्भर बनो मा. पंतप्रधान नरेंद्र मोदी जी की 'आत्मनिर्भरता की घोषणा से उपर्युक्त सलों के विचारों की उपादेयता स्पष्ट हो जाती है। मानवता के महान पूजारी संत गाडगे बाबा ने श्रम की प्रतिष्ठा करते हुए कहा है-

"पशु की होत पन्हया नर का कछु ना होय।
नर यदि करणी करे तो नर का नारायण होय।।

आज आधुनिक युग में हर एक व्यक्ति भव्य-दिव्य, चमक-धमक की अभिलाषा रखता है। अपने परपरागत व्यवसाय को छोड़ अपने गाँव से दूर शहर चले जाते है। यदि छोटा-बठा उद्योग धंदा का भेद छोड़ कर समय की माँग के अनुसार बदलाव कर काम करे तो अवश्य ही आर्थिक सुधार संभव है। आज के नवयुवकों के लिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण संदेश है।

पर्यावरण चेतना जैसे गंभीर समस्या पर कई शताब्दी पूर्व ही संतों ने अपने विचारों को स्पष्ट किया है। आज मनुष्य ने अपनि भौतिक प्रगति साधने हेतु प्रकृति, पर्यावरण को सबसे अधिक हानी पहुंचाई है। मनुष्य ने जिस प्रकृति के गोद में जन्म लिया आज अपनि लालसा, आवश्यकतापूर्ति हेतु, स्पर्धा की अंधी दौड़ के चलते उसीके नियमों के विरुद्ध जा रहा है। सुख और समृद्धिमय जीवन के लिए, ग्राम, कसबा तथा नगर में पेड-पौधे, महावनों और जलाशयों की नितांत आवश्यकता है। दूरदृष्टि के परिचायक संत ज्ञानेश्वर ने अपनी ज्ञानेश्वरी ग्रंथ में कहा है-

'नगरेचि रचावी। जलाशये निर्मावी ।
महावने लावी नानाविध ।।

लेकिन औद्योगिकीकरण के कारण मनुष्य ने अनगिनत वृक्षों एवं महावनों को तोड़कर, जलाकर, (ब्राझील) कारखानों तथा इमारतों का जंगल निर्माण किया है। इसलिए वन-वनस्पति एवं अन्य वन जीव-प्राणियों का विनाश हुआ। जिसके चलते पर्यावरण का हास, बढ़ता प्रदुषण, अकाल, बात, कड़ी थंड, अकाल बर्फवृष्टि जैसी कई नैसर्गिक आपत्तियों का सामना समस्त मानव जाति को करना पड़ रहा है। इसलिए संत शिरोमनी तुकाराम महाराज कहते है-

तोडुनि पुष्प वाटिका फलवृक्षयाती
बाभल राखिती करुनि सार।
तुका म्हणे त्यास नाई के सागता

तथा हाल करीता पाप नाही।।* .

पेड़-पौधों तथा जलाशयों को नष्ट करके हम अपने ही हाथों से अपने पैरों पर कुल्हाडी मार रहे है। यहीं समय रहते हमे पर्यावरण तथा वन्य जीवों का महत्व जानकर उनके रक्षा एवं

संवर्धन का अमुल्य संदेश दिया गया है। दूसरों के दुःख में अपने सुख की अभिलाषा करना तो पाप है। यदि किसी का दुःख बाँटकर हम सुख, आनंद समाधान को प्राप्त करे तो पुण्य है। निस्वार्थ सेवाभाव से की गयी मदद, दया मानो चारों धामों के पुण्य के समान है- संत कबीर कहते है

'तीरथ जावो काशी जायो, चाहे जावो गया
कबिर कहे कमाल को सबसे बड़ी दया।।

वर्तमान वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में समस्त विश्व एक ग्राम' बन गया है। और इस ग्राम में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मैं ही सबसे श्रेष्ठ हूँ यह सिद्ध करने में हर देश लगा हुआ है। फिर चाहे अंतरराष्ट्रीय राजनीति में चीन-अमेरिका, भारत-पाकिस्तान हो या अन्य योरोपियन देश हो। सारा विश्व युद्ध के भय में जी रहा है-

हे सारे विश्वची माझे घर

संत ज्ञानेशवर के इन विचारों को देखे तो प्रेम, दया, अहिसा एवं परोपकार से ही समस्त मानव जाति में वसुधैव कुटुंबकम्' के भाव को स्थापित किया जा सकता है। उपर्युक्त सतों के विचारों का प्रमुख आधार भले ही आध्यात्म हो लेकिन शताब्दी पूर्व प्रतिपादित किए गए विचार आज के आधुनिक विज्ञान के युग में भी शत-प्रतिशत सही लग रहे है। सच में आज किसी भी सामान्य आदमी को युद्ध नहीं शाती ही चाहिए। सहज जीवन पद्धती का स्वीकार, कर्म की प्रतिष्ठा, प्रेम, दया परोपकार की भावना, प्रकृति संरक्षण, लघुमानव की प्रतिष्ठा, आत्मनिर्भर होकर, भय का त्याग करना एवं झूठी प्रतिष्ठा, ईर्षा-द्वेष का त्याग करने का अमूल्य संदेश संत साहित्य से दिया गया है। समुचे विश्व में भौतिक विकास के साथ हाती बनाये रखने के लिए आध्यत्म और विज्ञान में समन्वयता साधना आज की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची

1) डॉ. पिताबर दत्त बड़थ्वाल-हिंदी काव्य की निर्गुण धारा, पृ.11
2) वही से
3) डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी कबीर, पद-2 पृ. 231
4) ले. सुधाकर सामंत-मानवता के महान पूजारी संत श्री गाडगे बाबा, पू. 42
5) डॉ. राम खेलावन-मध्यकालीन संत साहित्य, पं. 65
6)अनिल दीक्षित-संत सावता माली महाराज, प. 21
7) ले सुधाकर सामत-मानवता के महान पूजारी संत श्री गाडगे बाबा, पू. 66
8) ज्ञानेश्वरी-भाग 14 वा के 233 ऋऋचा
9) संपा. सुनील कुलकर्णी-संत साहित्य आधुनिक अवधारणाएँ, पृ. 124
10) ले. सुधाकर सामंत-मानवता के महान पूजारी संत श्री गाठगे बाबा, पू 66